आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:01-12-14

हम बच्चों को ईश्वरीय श्रीमत् धारण करवा कर हमें माया से बचाने वाले, बेहद के सतगुरु-बाप ने कहा, जैसे गीत में सुना बरोबर हम यात्रा पर चल रहे है. यात्रा पर भोजन आदि तो खाना ही पड़ता है, तो आज से हर सजनी परमात्मा-साजन के साथ और हर बच्चा परमात्मा-बाप के साथ ही खायेंगे तो माया से सदा बचे रहेंगे. तुम्हारी उस बेहद के साजन के साथ जितनी लगन होगी उतना खुशी का पारा भी चढ़ेगा. जितना निश्चयबुद्धि होंगे उतना विजयन्ती होते जायेंगे.

आज की मुरली में बाबा ने हम बच्चों को तीन मुख्य धारणाये पक्की करवाई. १. बाप और अपने भाग्य पर पुरा निश्चयबुद्धि होना. २. आत्म-अभिमानी बनने की ३. एक बाप की याद में रहकर भोजन करना.

हर धारणा पर बाप ने कहे महा-वाक्यों को हम रिपिट करेंगे.

१. बाप और अपने भाग्य पर पुरा निश्चयबुद्धि होना.

- बच्चे समझते हैं कि हमारे दुर्भाग्य के दिन बदल कर अब सदा के लिए सौभाग्य के दिन आ रहे हैं. बच्चे भी अपने निश्चय के आधार पर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार भाग्य बदलते ही रहते हैं. ज्ञान-सागर बाप ही तुम्हारे पर ज्ञान की वर्सा कर रहे है. सेन्सीबुल बच्चे समझते हैं बरोबर दुर्भाग्य से हम सौभाग्यशाली बन रहे है अर्थात स्वर्ग के मालिक बन रहे हैं.

- तुम जानते हो बाप तो गुप्त है तो उनकी बातें भी गुप्त हैं. बाप जो पढ़ाते हैं वह तुम्हारे सिवाय और कोई कुछ भी समझ नहीं सकते क्योंकि बेसमझ है. तुम निश्चयबुद्धि बच्चे ही नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपना दुर्भाग्य से सौभाग्य बना रहे हो. तुम ही समझते हो अब रात से दिन हो रहा है.

- तुम जानते हो सौभाग्यशाली कहा जाता है सूर्यवंशियों को, १६ कला सम्पूर्ण भी वही हैं. तुम्हें पुरा निश्चय है की हम बाप से स्वर्ग के लिए सौभाग्य बना रहे हैं, जो बाप स्वर्ग की रचना करने वाला है. हेविन में है सुख, हेल में है दुख. गोल्डन एज माना सतयुग सुख, आइरन एज माना कलियुग दुख. बिल्कुल सहज बात है.

- बच्चों को अपनी बादशाही याद पड़ती है. समझते हैं हम बादशाही में जाकर जन्म लेंगे. यह अब पक्का निश्चय है, बादशाही तो मिलनी ही है ना. इसी निश्चय के आधार पर अभी हम बाप को अपना सब-कुछ दे बाप से २१ जन्म का वर्सा लेते हैं. अभोक्ता बाप भी हमारा सब-

कुछ स्वीकार इसलिए करता है जिसे हमारा ममत्व निकल जाये और बदले में बाप हमें २१ जन्म स्वर्ग का सुख का वर्सा देते हैं.

२. आत्म-अभिमानी बनने की धारणा.

- बाबा ने हमें समझाया है की बाहर कहॉ भी जाते हो तो अपने को बहुत हल्का समझो. बुद्धि में रहे कि हम रुहानी बाप के रुहानी बच्चे हैं, हम आत्मा रॉकेट से भी तीखी हैं.

- बाबा कहते है ऐसे देही-अभिमानी होकर पैदल करेंगे तो कभी थकेंगे नहीं. देह का भान नहीं आयेगा. फिल करेंगे जैसे की यह टांगे चलती नहीं, बल्कि हम उड़ते जा रहे हैं. ऐसे देही-अभिमानी होकर तुम कहॉ पर भी जा सकते हो.

३. एक बाप की याद में रहकर भोजन करना.

- बाबा कहते है तुम सभी एक साजन की सजनिया हो तो साजन को याद भी करना पड़े. उस साजन को भोग लगाने के बिना खाने में तुम्हें लज्जा नहीं आती? वह तुम्हारा साजन भी है और बाप भी है.

- बाबा कहते है मुझे तुम नहीं खिलायेंगे! तुमको तो मुझे खिलाना चाहिए ना! बाप तुम्हें युक्तियॉ भी बतलाते है. तुम उसे अपना बाप और साजन मानते हो ना! तो तुम्हें जो खिलाता है, उनको पहले खिलाना चाहिए ना. बाबा कहते है हमको भोग लगाकर हमारी याद में खाओ. बाबा तुम्हें बार-बार समझाते है, बाबा को जरूर याद करना ही हैं.

- बाबा कहते है तुम कन्याओं के लिए तो बहुत सहज हैं. कन्या की तो साजन के साथ सगाई होती ही है. तो ऐसे साजन को याद करके ही भोजन खाना चाहिए.

- खाते समय बाप को याद करेंगे तो बाबा तुरंत हमारे पास आ जाते हैं. बाबा भी कहते है याद करेंगे तो भासना देंगे.

- बाबा कहते है कुमारीयों के लिए तो बहुत सहज है. शिवबाबा हमारा सलोना साजन कितना मीठा है. आधाकल्प हमने आप को याद किया. अभी आप आकर मिले हो! अभी हम जो खाते हो वह आप भी खाओ.

- बाबा कहते है ऐसे नहीं, एक बार याद किया बस, फिर तुम खुद खाते जाओ. उनको खिलाना भूलो मत. बाप को नहीं खिलायेंगे तो माया खा जायेगी, बाप को मिलेगा ही नहीं.

ॐ शांति.